कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नगर व्यवस्था व लोक प्रशासन।

*डॉ.सुप्रिया अग्रवाल

शोध सारांश

कौटिल्य एक महान भारतीय राजनीतिक चिन्तक के रूप में जाने जाते है। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र एक उच्च कोटि का ग्रंथ है।

बी.ए. सालेटोर के अनुसार

कौटिल्य का अर्थशास्त्र' राजनीति विषयक सभी ग्रंथो और विचारों का संग्रह तथा सार है। यह शासन कला व प्रशासन की व्यवहारिक समस्याओं पर लिखा गया एक ग्रंथ है।

इसमें भारद्वाज, विशालाक्ष, पराशर, पिशुन, वातव्याधि, काव्यायन, छोटमुख, पिशुपुत्र आदि आचार्यो के विचार उद्धत है। इसमें मनु, बृहस्पति, शुक्राचार्य, पराशर आदि सम्प्रदायों के विचार उद्धत है।

अर्थशास्त्र के प्रथम श्लोक में कौटिल्य ने स्पष्ट किया है ''पृथ्वी को प्राप्त करने और प्राप्त की रक्षा करने के लिए जितने अर्थशास्त्र प्राचीन आचार्यो ने लिखे है, प्रायः उन सबको संगृहीत करके यह एक अर्थशास्त्र बनाया गया है।''

अर्थशास्त्र की विषय वस्तुः

1. दण्ड नीति की प्रधानता अथवा धर्म व राजनीति का पृथक्ककरण

अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण में कौटिल्य ने चार विद्याओं का उल्लेख किया है।

1. आन्वीक्षकी (तर्क + दर्शन)
2. त्रयी (साम + ऋग + यजुर्वेद)
3. वार्ता (कृषि + पशुपालन + वाणिज्य)
4. दण्डनीति

जो प्राप्त न हो, उसे प्राप्त करना, प्राप्त हुए की रक्षा करना, रक्षित की वृद्धि करना और बढ़ी हुई सुख समृद्धि को यथा योग्य स्थानों व पात्रों में प्रयुक्त करना दण्डनीति है। कौटिल्य ने उचित दण्ड की बात की है। हरिदत्त वेदालंकर के अनुसार–

''भारत के राजदर्शन संबंधी विचारों को जानने के लिए कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है।''

2. अर्थ प्रधान राजनीति

कौटिल्य अर्थ को राज्य और व्यक्ति दोनों के लिए 'जीवन रेखा' माना है। अर्थ का पारिभाषित करते हुए उसने लिखा है ''मनुष्यों के व्यवहार अथवा जीविका को अर्थ कहते है मनुष्यों से युक्त भूमि का नाम भी अर्थ है, इस भूमि को प्राप्त करने अथवा रक्षा करने की उपायों की विवेचना करने वाला शाखा अर्थशास्त्र कहलाता है''। व्यक्ति के चार उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष में से मोक्ष की प्राप्ति परलोक में पर इकलोक में धर्म और काम की प्राप्ति अर्थ से होती है।

वस्तुतः कौटिल्य का दर्शन भौतिकवादी है। उसने अर्थव्यवस्था को नियमित व नियंत्रित ही नही किया अपितु आर्थिक

क्रियाओं में भाग लेकर सार्वजनिक व निजी क्षेत्र को निर्धारित किया है, उद्योगों के विकास क्रम को निर्धारित किया है, मालिकों, उत्पादको व उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा की बात की है व श्रम समस्याओं का निवारण किया है।

3. शासन कला का व्यवहारिक ग्रंथ–

- इसमें राजा, मंत्री आदि की नियुक्ति, कार्य व उत्तदायित्वों का विवेचन है।
- इसमें कर व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, अन्तराज्यीय व कूटनीतिक संबंधों, गुप्तचर, युद्ध, मित्र, शत्रु आदि का विवेचन है।
- इसमें कर व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, अन्तरजातीय व कूटनीतिक संबंधों, गुप्तचर, युद्ध, मित्र आदि का विवेचन है।
- इसमें अर्थव्यवस्था, उद्योग, कृषि, पशुपालन, व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार आदि का विवेचन है।

राजतंत्र

कौटिल्य राजतंत्र का समर्थक है। उसने केन्द्रीकृत शासन का समर्थन किया है। शासन की सारी सत्ता स्वामी में केन्द्रित है। स्वामी अमात्यों की सहायता से राज्य के कार्यो को सम्पन्न करता है परन्तु अनुशासन व नियंत्रण को वह सामाजिक जीवन की प्रथम आवश्यकता समझता है।

बी.पी. वर्मा के अनुसार ''अर्थशास्त्र में हम यह पाते है कि मुख्य बल साम्राज्य के केन्द्रीकरण पर है''।

बेनीप्रसाद के शब्दों में अर्थशास्त्र में वर्णित प्रशासनिक व्यवस्था हिन्दी साहित्य में सर्वोत्कृष्ट है, जिसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रह गई है।

यथार्थवादिता

कौटिल्य यथार्थवादी है उसने विवेक को उत्पत्ति का आधार माना है। वह कहता है कि दैव को ही प्रमाण मानने वाले पुरूष को कार्यसिद्धि कभी नहीं होती। उसने वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया है, और सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का समर्थन नहीं किया। उसके अनुसार ''अच्छाई की सिद्धि के सही उपायों का आविष्कार करने में व्यवहार की सही दिशा का अनुकरण करने में तथा कार्य के सही मार्ग का चयन करने में विवेक ही हमारा मार्गदर्शन होना चाहिए''। उसने न केवल राजनैतिक विचारों का प्रतिपादन किया बल्कि व्यवहारिक कार्यो के आधार पर दश को सुदृढ व केन्द्रीकृत शासन दिया।

ऐतिहासिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण

कौटिल्य ने इतिहास को मानव बुद्धि की अभिव्यक्ति माना है। उसने शिक्षा में इतिहास के अध्ययन को अत्यन्त महत्व दिया है। यद्यपि उसके निष्कर्ष पर्यवेक्षण, विवेक व अनुभूति पर आधारित है।

सांसारिक ज्ञान तथा सामान्य ज्ञान का जीवन में महत्व का प्रतिपादन–

अपने अर्थशास्त्र में उन्होनें विवेक, सांसारिक व सामान्य ज्ञान को महत्वपूर्ण माना है।

अनुशासन का प्रतिपादन–

राज्य व शासन की सुदृढ़ता के लिए उसने इसमें निवास करने वाली जनता के अनुशासित होने को प्राथमिक शर्त माना है। अर्थ, धर्म व काम का मानव जीवन में महत्व– इहलौक में उसने धर्म, अर्थ व काम के महत्व को स्वीकार किया है।

लोककल्याणकारी व सामजसेवी राज्य का पूर्वानुमान–

कौटिल्य ने अपना राज्य परोपकारी व लोककल्याणकारी माना है जिसका लक्ष्य नागरिकों का हित व सुख देखना था। उसने राजा को निरंकुश बनने से रोकने के लिए कई तरह के प्रतिबंध लगाए है। उसने राजकीय कार्यों में प्रजा की सहभागिता की वकालत की है।

प्रशासन तंत्र का सुस्पष्ट निरूपण–

कौटिल्य ने प्रशासनिक दक्षता के लिए प्रशासनिक अधिकारियों के बीच विभिन्न प्रशासनिक कार्यो के विभाजन, प्रशासनिक निष्पक्षता, प्रशासन का कानून के शासन के आधार पर संचालन, योग्यता के आधार पर प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति, प्रशासनिक अधिकारियों का देश की विधि के प्रति उत्तरदायित्व, कानून का क्रियान्वयन, प्रशासनिक अधिकारियों के उच्च चरित्र, कार्मिकों के प्रशिक्षण आदि के बारे में अपने विचार रहे है।

विधि के शासन का प्रतिपादन–

कौटिल्य ने प्रशासन को विधि में रहकर निर्णयों को क्रियान्वित करने की सलाह दी है। इसके लिए उसने दण्ड व न्याय प्रशासन की वकालात भी की है।

नम्यता व संतुलन का समर्थन–

- शक्ति के साथ संयम की बात करता है।
- राजतंत्र के समर्थन के साथ निरंकुशतावाद का विरोध करता है।
- भौतिकवादी है, पर उपयोगिता के सुखवाद का समर्थन नहीं।
- वर्णव्यवस्था का समर्थन, पर उदारवादी है।
- राज्य अनुशासन का समर्थन पर फॉसीवाद का विरोध।
- राज्य सम्प्रभुता का समर्थन पर बहुलवाद का समर्थन भी करता है।

बहुआयामी राजशास्त्र–

कौटिल्य प्रथम बहुआयामी राजशास्त्री था। न केवल राजनीति बल्कि समाज, धर्मव्यवस्था प्रशासन, विदेश नीति सभी पर अपने विचार रखे।

सांराशतः

कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक चिन्तन में व्यवहारिकता व यर्थावादिता के सम्मिश्रण की वर्तमान परिस्थितियों में भी प्रासांगिकता बनी हुई है।

***Lecturer,**
Balaji College,
Ajitgarh.

संदर्भ सूची

1. बी.ए. सालेटोर

   Ancient Indian Political thought and Institutions P. 50. 54
2. हरिदत्त वेदालंकार, प्राचीन भारत की शासन संस्थाएं और राजनीतिक विचार श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली पृ.सं.–26–27
3. V.P. Verma : Ancient & Medical Indian Political Thought, Laxmi Narayan Agarwal, Publesher Agra 2001, P. 63
4. बी.ए. सालेटोर, Op. Cit-PP-50-54